Three days Training programme for officers and Frontline staff of Sarahan Wildlife Division

'Capacity Building on Various Aspects of Forestry'

HFRI SHIMLA, 22nd to 24th July, 2019

Himalayan Forest Research Institute (HFRI), Shimla organized three days training and demonstration programme sponsored by Wildlife Wing, Himachal Pradesh State Forest Department on **'Capacity building on various aspects of forestry'** for the officers and Frontline staff of Sarahan Wildlife Division (H.P.) from 22nd to 24th July, 2019. This training programme was fully. 17 participants including DFO (WL) Sarahan, Zoo Biologist and Forest Guards participated in the training programme.

Dr. Sandeep Sharma, Scientist-G

The inaugural session of the training programme started with a brief introduction by **Dr. Sandeep Sharma, Training Coordinator**. Welcoming the Chief guest and officials from Sarahan Wildlife division, Dr. Sandeep Sharma informed about the schedule of the three days training course. He also explained about different activities and major achievements of Himalayan Forest Research Institute.

Dr. S. S. Samant, Director, HFRI

Dr. S. S. Samant, Director, Himalayan Forest Research Institute, Shimla welcomed the Chief Guest of the inaugural session **Dr. Sushil Kapta, IFS, CCF (WL**) and delegates of the training programme. He told that Himachal Pradesh has been bestowed with rich wealth of forestry tree and medicinal plants species. He said that the identification of different plant species and adoption of appropriate nursery and planting techniques are the main areas where capacity building is must for the frontline staff of the Forest Department. He hoped that the participants will definitely be benefited from this training programme. He also thanked Wildlife Wing, Himachal Pradesh State Forest Department for sponsoring this important training programme.

Dr. Sushil Kapta, IFS CCF (WL)

Dr. Sushil Kapta, CCF (WL) and Chief Guest of the training programme thanked Himalayan Forest

Research Institute for organizing this important training programme. He expressed satisfaction over the wide range of topics included in the training schedule and urged the frontline staff of the Wildlife Wing to interact freely with the scientists of the institute and implement the ideas learnt in their professional life. He insisted field staff to include the plantations of Walnut, Horse chestnut and Jamun etc. rather than focusing on single tree species like Chuli. He insisted on raising patches of wild edible fruit species in the forest areas thereby restricting wildlife in those forest areas to minimize human wildlife conflicts. He hoped that the field staff will surely be benefited from this training programme.

Dr. Sandeep Sharma, Scientist –G and Course Coordinator while proposing vote of thanks specially thanked chief guest CCF (WL) for sparing his valuable time and gracing the inaugural session of the training programme.

During the three days training programme experts from HFRI, UHF Nauni, Govt. Degree college Theog, delivered talks on various topics related to Field botany, biodiversity conservation and management, seed and nursery techniques, production of quality planting stock, disease management, GPS and Map Reading etc. delivered by Dr. S. S. Samant, Director, HFRI; Dr. Sandeep Sharma, Scientist, HFRI; Dr. Vaneet Jishtu, Scientist HFRI; Sh. P. S. Negi, Scientist, HFRI; Sh. Dinesh Pal, DCF, HFRI; Dr. Ashwani Tapwal, Scientist, HFRI; Dr. Anil Thakur, Associate Prof. Botany, Govt. Degree College Theog; Dr. Swarn Lata, Scientist, HFRI and Dr. R. K. Verma, Scientist, HFRI. The different topics covered during training programme were: Basics of Field Botany and Identification of Important High Altitude Plants and Wild fruits; Seed and Nursery Techniques for raising Juniper; Biodiversity conservation and Management; Modern Nursery Techniques and Production of Quality Planting Stock; Disease incidences in Nursery and their Management; Basics of Plant Taxonomy; Importance of Ethnomedicinal Plants in Himalayan Region; Nursery techniques of Important High Altitude Medicinal Plants; Phyto-diversity in Rakchham- Chitkul Wildlife Sanctuary; Introduction to Global Positioning System (GPS) and Map Reading.

The participants were also taken to Field Research Station Shilli, Solan and Western Himalayan Temperate Arboretum (WHTA), Potter Hill, Summer Hill, Shimla, for actual demonstration on nursery practices and identification of different plant species during the second day of the training programme on 23rd July 2019.

The closing session of the training programme on 24th July, 2019 was chaired by **Dr S. S. Samant, Director HFRI**. Delegates interacted freely and gave their valuable feedback during this session. Certificates of participation were also distributed to the participants by the Director, HFRI Shimla. Dr. Sandeep Sharma, Training Coordinator presented formal vote of thanks to all resource persons for sparing their valuable time and participants for active participation and making this training programme a success.

****

Some Glimpse of the Training

Training Programme
apacity Building on Various Aspects of Forestry'
for Officers and Frontline Staff of Sarahan
ife Division
22 - 24 July, 2019
Organized by
Himalayan Forest Research Instit
imla
(Indian Council of Forestry Research
ucation)
Sponsored by
Wildlife Wing, Himachal Pradesh State
epartment

****

Newspaper Clippings

वन्य प्राणी विंग के अधिकारियों को दिया प्रशिक्षण

वानिकी पहलुओं पर क्षमता निर्माण के लिए शिमला में हुआ कार्यक्रम

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में प्रशिक्षण में भाग लेने पहुंचे अधिकारी व कर्मचारी।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के तत्वावधान में वानिकी के विभिन्न पहलुओं पर क्षमता निर्माण विषय पर सराहन वन्य प्राणी मंडल के अधिकारियों और अग्रिम श्रेणी कर्मचारियों के लिए यहां तीन दिवसीय प्रशिक्षण और प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन वन विभाग के वन्य प्राणी विंग की ओर से किया गया। इसमें सराहन के वन मंडल अधिकारी, जीव विज्ञानी और वन रक्षकों सहित अन्य प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में वन्य प्राणी विंग के सीसीएफ डॉ. सुशील काप्टा बतौर मुख्यातिथि शामिल हुए। इनके अलावा हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक डॉ. एसएस सामंत भी विशेष तौर से उपस्थित रहे। उन्होंने बताया कि हिमाचल प्रदेश में वानिकी, वृथ और औषधीय पौधों की प्रजातियां बहुतायात में पाई जाती हैं। प्रतिभागियों से कहा कि विभिन्न पौधों की प्रजातियों की पहचान और आधुनिक नर्सरी व पौधरोपण तकनीकों को अपनानाएं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्रतिभागी निश्चित रूप से लाभांवित होंगे। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. संदीप शर्मा ने तीन दिनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा के बारे में विस्तार से बताया और हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की गतिविधियों व प्रमुख उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। डा. सुशील काप्टा ने वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मचारियों से संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ स्वतंत्र रूप से बातचीत करने और अपने अनुभव साझा करने को कहा। कर्मचारियों से चूली के अलावा जंगली खाद्य फल प्रजातियों के पौधरोपण करने को भी कहा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के तीनों दिन वनस्पति विज्ञान, जैव विविधता संरक्षण और प्रबंधन के अलावा आधुनिक बीज व नर्सरी तकनीक, गुणवत्ता रोपण स्टॉक का उत्पादन, जूनीपर के बीज एवं पौधशाला तकनीक, नर्सरी रोग प्रबंधन, जीपीएस और मैप रीडिंग विषयों पर व्याख्यान दिए गए। इसी तरह नर्सरी और खेती पर वास्तविक प्रदर्शन, विभिन्न पौधों की प्रजातियों की पहचान के लिए प्रतिभागियों को सोलन में शिल्ली स्थित फील्ड रिसर्च स्टेशन, पश्चिमी हिमालय टेंपरेट अर्बोरिटम पॉटर हिल शिमला में क्षेत्र भ्रमण पर भी ले जाया गया।

■ आधुनिक नर्सरी व नई तकनीकों को अपनाना सिखाया

औषधीय पौधों की पहचान करने की जरूरत : सामंत

शिमला, 24 जुलाई (ब्यूरो): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला (एच.एफ.आर.आई.) में वानिकी के विभिन्न पहलुओं पर क्षमता निर्माण विषय पर 3 दिवसीय कार्यशाला संपन्न हुई। वन विभाग के वन्य प्राणी विंग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सराहन वन्य प्राणी मंडल के अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। एच.एफ.आर.आई. के निदेशक डा. एस.एस. सामंत ने बताया कि हिमाचल में वानिकी वृक्ष और औषधीय पौधों की प्रजातियां बहुतायत मात्रा में पाई जाती हैं। इनकी पहचान करके आधुनिक नर्सरी और पौधारोपण तकनीकों के लिए कर्मचारियों को तैयार करने की जरूरत है।

पंजाब केसरी ई-पेपर Thu, 25 July 2019 https://epaper.punjabk

शिमला : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में आयोजित शिविर के दौरान संयुक्त चित्र में प्रतिभागी। (वि.स.)

Danik Jagran, 25th July, 2019

कौन से जंगली पौधे रोपें, वन कर्मियों को मिला प्रशिक्षण

राज्य ब्यूरो, शिमला : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में 'वानिकी के विभिन्न पहलुओं पर क्षमता निर्माण' विषय पर सराहन वन्य प्राणी मंडल के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें वनों में कौन- कौन प्रजातियों के पौधे रोपे जाने चाहिए, वैज्ञानिकों ने समझाया। उन्होंने चूली के अलावा जंगली खाद्य फल प्रजातियों के पौधे लगाने की सलाह दी। मानव-वन्य जीव के बीच बढ़ते टकराव को रोकने के लिए जंगली खाद्य पौधे अधिक से अधिक क्षेत्रों में विकसित करने पर जोर दिया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. एसएस सामंत ने वन कर्मियों को बहुमूल्य सुझाव दिए। वन्य प्राणी विंग के सीसीएफ डॉ. सुशील काप्टा ने कहा कि हिमाचल में वानिकी और औषधीय पौधों की प्रजातियां बहुतायत मात्रा में पाई जाती हैं। विभिन्न पौधों की प्रजातियों की पहचान, आधुनिक नर्सरी और पौधारोपण तकनीकों को अपनाना आदि मुख्य क्षेत्र हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ. एसएस सामंत, डॉ. संदीप शर्मा, डॉ. विनीत जिष्टु पीएस नेगी, दिनेश पाल, डॉ. अश्वनी तपवाल, डॉ. अनिल ठाकुर समेत कई वैज्ञानिकों ने संबोधित किया।

****